भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के कारण

डॉ. के.के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ 1885 से माना जाता है जब भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की स्थापना हुई थी। परम्परागत इतिहासकारों ने भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान तथा विकास के लिए अंग्रेजी शासन तथा उनकी स्थापित संस्थाओं को प्रेरणा स्रोत माना है। उनका मानना है कि उपनिवेशवाद की कुछ सकारात्मक, जैसे—शिक्षा का प्रसार और अधिकांश नकारात्मक नीतियों, जैसे–आर्थिक शोषण तथा प्रजातीय अत्याचार के कारण भारतीयों में जो प्रतिक्रिया हुई, उसी का परिणाम राष्ट्रवाद का उत्थान था ।

यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि अंग्रेज शासकों तथा विद्वानों ने भारत को एक राष्ट्र मानने से ही इन्कार कर दिया था और उसे केवल एक भौगोलिक अभिव्यक्ति या इकाई मानते थे। 1883 में सीले ने भारत को एक 'भौगोलिक इकाई ´ कहा जिसमें राष्ट्रवाद की भावना का कोई तत्व नहीं था । 1884 में सर जॉन स्ट्रेची ने कहा था, "भारत के विषय में सबसे पहले तथा प्रमुख आवश्यक जानने योग्य बात यह है कि भारत न एक है और न एक था।" प्रायः ब्रिटिश प्रशासकों, इतिहासकारों का यही मत था ।

19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में यह स्पष्ट हो गया था कि भारतीय राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली तत्व था और अंग्रेज शासक उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते थे। इसलिए अंग्रेजों ने राष्ट्रवादी आन्दोलन को दुर्बल दी करने के लिए 'फूट डालो और राज्य करा' की नीति आरम्भ की। 20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारतीय राष्ट्रवाद ने उग्रवादी और क्रान्तिकारी स्वरूप ग्रहण किया। इसके बाद अंग्रेजों ने यह राग अलापना आरम्भ किया कि भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजों की देन था। मोन्टफोर्ट रिपोर्ट में लिखा गया कि, "राजनीतिक भावना से प्रेरित भारतीय–बौद्धिक रूप से हमारी सन्तान हैं। उन्होंने वे ही विचार अपनाये हैं जो हमने उनके सामने रखे हैं और इसका श्रेय हम को ही मिलना चाहिए।"

भारत के राष्ट्रवाद का उत्थान तथा विकास भारतीय परम्पराओं के आधार पर हुआ, लेकिन इसमें आधुनिकता का समावेश हुआ। राष्ट्रवाद तथा प्रजातन्त्र की

भावनाओं का व्यापक प्रसार फ्रान्सीसी क्रान्ति के पश्चात् सारे विश्व में हो रहा था। भारत पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इस प्रकार आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक कारणों का योगदान था।

<u>ये कारण मुख्य रूप से निम्नलिखित थे–</u>

(1) 1857 के विद्रोह का प्रभाव (Effect of The Revolt of 1857)– 1857 के विद्रोह की असफलता तथा अंग्रेजों द्वारा की गयी बर्बर, पाशविक हत्यायें भारतीयों को दीर्घकाल तक स्मरण रहीं। 1857 का विद्रोह इतनी शीघ्रता से फैला था कि उसे जन–विद्रोह कहना ही उपयुक्त होगा। इसके दमन में अंग्रेजों जिस अमानवीय कार्यवाही की नीति अपनायी थी, उससे जनता के असन्तोष में वृद्धि हुई थी।

अंग्रेजों के अत्याचारों ने भारतीयों में घृणा की भावना उत्पन्न कीं। ज्यों–ज्यों ये अत्याचार बढ़ते गये उसी प्रकार इस घृणा में भी वृद्धि हुई। इससे भारतीयों में विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने की भावना में बढ़ती गयी। एडवर्ड थामसन ने लिखा है कि विद्रोह के बाद भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति भयंकर घृणा की भावना आ गयी थी और अंग्रेजों में भी प्रतिशोध की भावना बढ़ती जाती थी।

इस प्रकार 1857 के विद्रोह की स्मृति बनी रही और राष्ट्रीयता के उद्भव में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा।

(2) राजनीतिक एकता की स्थापना (Establishment of Political Unity) — अंग्रेज साम्राज्यवादी थे और उन्होंने धीरे–धीरे भारतीय राज्यों को समाप्त करके या पराजित करके सम्पूर्ण भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इस ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति से देश को बहुत हानियाँ उठानी पड़ीं। लेकिन इसका एक लाभ यह हुआ कि सारे देश में राजनीतिक एकता स्थापित हुई, एक प्रकार का प्रशासन स्थापित हुआ और संचार साधनों के विकास से देश के विभिन्न भागों के लोगों में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित हुए। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि व्यक्तिगत स्वार्थों या क्षेत्रीय स्वार्थों के स्थान पर सम्पूर्ण देश के हितों पर सोचा जाने लगा। इससे राष्ट्रवादी भावनाओं को शक्ति प्राप्त हुई और राजनीतिक एकता के साथ राष्ट्रीय एकता भी दृढ़ हुई। धीरे–धीरे देश की आर्थिक समस्याओं तथा विकास पर भी राष्ट्रीय नीति बनने लगी। इस प्रकार सभी क्षेत्रों में अखिल भारतीय भावना का विकास हुआ।

जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है, "ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित भारत की राजनीतिक एकता सामान्य अधीनता की एकता थी लेकिन उसने सामान्य राष्ट्रीयता को जन्म दिया। "

(3) पाश्चात्य शिक्षा तथा विचारों का प्रभाव (Impact of Western Education and Thought)—भारत की राष्ट्रीयता के उद्भव तथा विकास में पाश्चात्य विचारों तथा शिक्षा प्रणाली का गहरा प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों का पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की स्थापना करने तथा अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने का मूल उद्देश्य भारतीय संस्कृति को समाप्त करके भारतीयों में एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना था जो रक्त और वर्ण से तो भारतीय होगा लेकिन रुचि, विचार, अभिव्यक्ति तथा बुद्धि से अंग्रेज होगा। इस नीति के प्रवर्तक मेकाले का विचार था कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के द्वारा भारत में ब्रिटिश कार्यालयों के लिए कम वेतन पर कर्मचारी प्राप्त होंगे। मेकाले का यह विचार भी था कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारतीय युवकों में अंग्रेजी राज्य के प्रति स्वामिभक्ति की भावना जागृत होगी और विचारों की दृष्टि से वे अंग्रेजों के निकट आ सकेंगे। यही विचार अन्य अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारियों के भी थे। एलफिन्सटन ने लिखा था, ष अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भारतीय जनता सहर्ष अंग्रेजी राज्य स्वीकार कर लेगी।" वस्तुतः मेकाले का अनुमान एक सीमा तक सत्य सिद्ध हुआ। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके भारत में ऐसा वर्ग निर्मित हुआ जिसका दृष्टिकोण पाश्चात्य था और वह ब्रिटिश शासन को भारत के लिए लाभदायक मानता था।

(4) धार्मिक तथा सामाजिक पुनर्जागरण (Religious and Social Renaissance) – 19वीं शताब्दी में भारत में कई ऐसे सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन हुए जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन आन्दोलनों के नेताओं का विश्वास था कि राजनीतिक जागृति के लिए सामाजिक और धार्मिक जागृति आवश्यक थी। अतः उन्होंने सामाजिक बुराइयों तथा धार्मिक अन्धविश्वासों के उन्मूलन लिए कार्य किया। इन आन्दोलनकर्ताओं ने भारतीयों में अपने गौरवपूर्ण अतीत और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था और विश्वास भी उत्पन्न किया। उनके आन्दोलनों से भारतीयों में बन्धुत्व की भावना तथा आत्मविश्वास की प्रेरणा प्राप्त हुई और उनमें देशभक्ति तथा राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न हुई ।

जकारिया लिखते हैं, "भारत की पुनर्जागृति मुख्यतः आध्यात्मिक थी और एक राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप धारण करने के पूर्व इसने अनेक सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों का सूत्रपात किया।ष इन सुधार आन्दोलनों में ब्रह्म समाज, आर्य समाज,

रामकृष्ण मिशन थियोसोफिकल सोसाइटी, प्रार्थना समाज प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने भारतीयों का ध्यान अपने गौरवपूर्ण अतीत की ओर आकृष्ट किया और भारतीय संस्कृति को राष्ट्र प्रेम के स्रोत में प्रस्तुत किया। इस सामाजिक तथा धार्मिक जागृति के कई कारण थे–प्रथम ब्रिटिश सरकार किसी भी सामाजिक सुधार में रुचि नहीं रखती थी, अतः भारतीयों ने स्वतः इनका आरम्भ और संगठन किया। द्वितीय, अंग्रेज शफूट डालो और राज्य करोश नीति का अनुसरण कर रहे थे, अतः देश का शिक्षित वर्ग सामाजिक तथा धार्मिक जागृति के द्वारा राष्ट्रीयता का ठोस आधार निर्मित करना चाहता था। तृतीय, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक था कि पहले सामाजिक तथा धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना की जाये।

(5) मध्यम वर्ग का उत्थान (Rise of Middle Class) – भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास में नवोदित मध्यम वर्ग की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। अंग्रेजी शासन के प्रसार से मध्यकालीन अनेक राजे–रजवाड़े और उनकी सामन्तवादी शासन प्रणालियाँ समाप्त हो गयी थीं। अंग्रेजी शासन काल में, उनकी प्रशासनिक तथा आर्थिक नीतियों के कारण मध्यम वर्ग का क्रमिक उत्थान हुआ। बड़े–बड़े नगरों में भारतीयों का एक नया अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्ग का उत्थान हो रहा था जो बुद्धिजीवी था और जिसने इंग्लैण्ड में भी शिक्षा प्राप्त की थी। इस वर्ग का उद्देश्य प्रशासन में नियुक्तियाँ प्राप्त करना था। इस काल में प्रशासनिक नियुक्तियों को सम्मान का साधन समझा जाता था। यह वर्ग कनिष्ठ प्रशासक, वकील, डाक्टर तथा अन्य प्रशासनिक सेवाओं में ब्रिटिश प्रशासन से जुड़ा हुआ था। वे भारत में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति तथा इंग्लैण्ड में उनकी प्रजातान्त्रिक संस्थाओं का अन्तर अच्छी तरह समझते थे। इस शिक्षित और मध्यम वर्ग ने ही राष्ट्रीय आन्दोलन में नेतृत्व प्रदान किया।

(6) अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीति (British Policy of Economic EÛploitation) – अंग्रेजों की आर्थिक शोषण की नीति ने भारत में राष्ट्रीय चेतना की जागृति में योगदान दिया। अंग्रेजों की दृष्टि में भारत उनका एक उपनिवेश था जिसका वे अधिक से अधिक शोषण करना चाहते थे। उन्होंने केवल ब्रिटिश हितों की रक्षा की और भारतीयों हितों की पूर्ण उपेक्षा की। उनका उद्देश्य भारत को अपने निर्मित उत्पादों के लिए बाजार मात्र बनाना था और अपने कारखानों के लिए भारत से कच्चा माल प्राप्त करना था। फलस्वरूप भारत में निधनता तथा भुखमरी बढ़ती गयी और भारतीय व्यापार, कृषि उद्योग नष्ट हो गये। अंग्रेजी इसके शासन ने समृद्धिशाली भारत को किस स्थिति में पहुँचा दिया था। इसे विलियम डिग्बी के वक्तव्य से जाना जा सकता है और उसने 1900 ई. में लिखा था, "भारत में 10 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्हें किसी भी समय भरपेट भोजन नहीं मिलता है। इस

अधःपतन का दूसरा उदाहरण इस समय किसी भी सभ्य और उन्नतिशील देश में कहीं पर दिखाई नहीं देता।"

(7) ब्रिटिश शासकों का प्रजातीय अहंकार (Racial Arrogance of the British Rulers) – अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ देश में तथा देश के बाहर जो दुर्व्यवहार किया उसने भी भारतीय राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया। इस दुर्व्यवहार का कारण अंग्रेजों का प्रजातीय अहंकार था। 1857 के पश्चात् उनका यह दुर्व्यवहार सभी सीमाओं को पार कर गया। वे भारतीयों को 'अर्द्ध–हब्सी', 'अर्द्ध–काला' कहते थे । दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। इंग्लैण्ड की व्यंग्य पत्रिका 'पंच' अपने व्यंग्य चित्रों में भारतीयों को 'उपमानव' के रूप में प्रदर्शित करती थी जिसे आधा गोरिल्ला और आधा हब्सी दिखाया जाता था। तात्पर्य यह था कि भारतीय इस प्रकार के उपमानव थे जिन्हें शक्ति द्वारा ही नियन्त्रण में रखा जा सकता था। इस प्रकार अंग्रेज स्वयं को एक श्रेष्ठ जाति का और भारतीयों को निकृष्ट जाति का मानते थे। भारतीयों को विश्वास गया कि यह सब उनकी दासता के कारण था। गम्भीर अपराधों के लिए अंग्रेजों को दण्ड नहीं दिया जाता था। एडवर्ड गेरेट ने अंग्रेजों की बर्बरता तथा हत्याओं लम्बी सूची दी है जो उन्होंने भारतीयों के प्रति की थीं। 1864 ई. में ट्रेवेलियन ने लिखा था, "न्यायालय में हमारे एक भी देशवासी के साक्ष्य का वजन असंख्य हिन्दुओं के साक्ष्य से अधिक होता है। यह ऐसी परिस्थिति है जो एक बेईमान और लोभी अंग्रेज के हाथों में सत्ता का एक भयंकर उपकरण रख देती है।"

(8) यातायात तथा संचार साधनों का विकास– देश में राष्ट्रीयता के विकास में यातायात साधनों के विकास का भी योगदान है। अंग्रेजों ने रेल तथा सड़क मार्गों का विकास मुख्य रूप से अपने व्यापारिक तथा सैनिक हितों की रक्षा के लिए किया था। उनका विचार था कि इससे भारत का आर्थिक शोषण बड़े पैमाने पर तथा सरलता से कर सकेंगे। लेकिन इनका एक लाभ यह हुआ कि देश के भिन्न–भिन्न भागों में रहने वाले लोग सारे भारत का भ्रमण करने लगे, आपस में विचार–विमर्श करके समस्याओं का हल खोजने लगे और इसी से विभिन्न संगठनों का निर्माण सरल हो गया। इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला। रेलमार्गों की सुविधा के कारण ही सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, लिटन के दमनकारी कार्य के विरुद्ध सारे भारत का दौरा कर सके थे ।

(9) समाचार पत्रों का योगदान (Role of Press) – राष्ट्रीय चेतना के विकास में भारतीय समाचार–पत्रों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। भारतीय प्रेस ने भारतीयों में

प्रतिनिधि संस्थाएँ, प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली, स्वशासन तथा आत्मनिर्भरता की भावनायें उत्पन्न कीं। उन्होंने अंग्रेजी शासन के अत्याचारों, राजनीतिक, आर्थिक उत्पीड़न की कटु आलोचना की। उन्होंने अंगेजी शासन की कमियों को उजागर किया और लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। अंग्रेजी सरकार ने भारतीय समाचार–पत्रों का दमन करने के लिए कठोर कार्यवाही की । अनेक समाचार–पत्रों का प्रकाशन बन्द किया गया, उन पर मुकदमा चलाकर कठोर दण्ड दिये गये लेकिन समाचार–पत्रों ने देश सेवा और राष्ट्रीय हित की रक्षा अडिग भाव से की और अपने कर्तव्यों से कभी विचलित नहीं हुए। उन्होंने जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य किया। इस सन्दर्भ में दि इण्डियन मिरर, दि अमृत बाजार पत्रिका, दि बॉम्बे क्रोनिकल, दि हिन्दू पेट्रियट, दि मराठा, दि केसरी, आन्ध्र प्रकाशिका, दि हिन्दू, दि इन्दुप्रकाश, दि कोहेनूर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया। इनमें बंकिमचन्द्र चटर्जी, हेमचन्द्र बनर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, केशवचन्द्र सेन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बंकिम के आनन्द मठ और उनका गीत वन्देमातरम् ने राष्ट्रवादियों को संघर्ष की असीम प्रेरणा दी थी।

(10) लार्ड लिटन की दमनात्मक नीति (Repressive Policy of Lord Lytton) – लार्ड लिटन 1876–1880 के काल में वायसराय था। उसकी दमनात्मक नीति ने राष्ट्रीय जागृति में महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने कई ऐसे दमनात्मक कार्य किये जिनसे भारतीयों में रोष बढ़ा और वे अंग्रेजी शासन का विरोध करने के लिए कटिबद्ध हो गये। उसने आई. सी. परीक्षा में बैठने की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी जिससे भारतीय युवक परीक्षा में न बैठ सकें। 1877 के भीषण अकाल के समय शानदार दरबार का आयोजन करके क्रूरता तथा निर्दयता का प्रदर्शन किया। उसने भारतीय शस्त्र अधिनियम और वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित करके जातीय कटुता में वृद्धि की ।

(11) इल्बर्ट बिल विवाद (The Ilbert Bill Controversy) – इस विवाद की राष्ट्रीय चेतना के विकास में निर्णायक भूमिका थी। वायसराय लार्ड रिपन भारतीय जिला तथा सेशन जजों को वही अधिकार देना चाहता था जो उनके यूरोपियन साथियों को मिले हुए थे। इसी उद्देश्य से उसकी कार्यकारिणी के विधि सदस्य इल्बर्ट ने 1883 ई. में एक विधेयक प्रस्तुत किया । वस्तुतः रिपन का उद्देश्य "जाति भेद पर आधारित असमानताएँ" समाप्त करना था लेकिन भारत में रहने वाले अंग्रेजों ने कटु प्रतिक्रिया की और इसे अपना जातीय अपमान माना। उन्होंने "यूरोपियन सुरक्षा संस्था" का गठन किया। इस संगठित विरोध के कारण रिपन को बिल में संशोधन करना पड़ा। भारतीयों के लिए यह महत्वपूर्ण राजनीतिक पाठ था।

(12) विदेशी घटनाओं का प्रभाव (Effect of Foreign Event) – कुछ विदेशी घटनाओं का भी भारत की राष्ट्रीय चेतना के विकास पर प्रभाव पड़ा था। अमेरिका का स्वातन्त्रय युद्ध, फ्रांस की राज–क्रान्ति ने भारतीयों को प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रकार जर्मनी तथा इटली का राष्ट्रीय एकीकरण और इंग्लैण्ड में संसदीय सुधार के द्वारा प्रजातन्त्र की स्थापना आदि ने भारतीय जन–मानस पर गहरा प्रभाव डाला। इन आन्दोलनों ने भारतीयों को दृढ़ता प्रदान की और स्वाधीनता के संघर्ष के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें विश्वास हो गया कि ब्रिटिश शासन ही उनकी समस्याओं का मूल कारण था और उससे मुक्ति पाना आवश्यक था, तभी राष्ट्र निर्माण हो सकता था।